**हाड़ौती अहीर समाज के कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का उद्‌बोधन**

हाड़ौती अहीर समाज के तत्वाधान में आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन, प्रतिभावान छात्र सम्मेलन, भामाशाह सम्मान समारोह, नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में पधारे समाज के सभी बंधुगण का धन्यवाद।

हाड़ौती में ही नहीं, पूरे देश के अंदर अहीर समाज एक कर्मयोगी समाज है। कर्म प्रधान समाज है। ये भगवान श्रीकृष्ण के वंशज हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने जो कर्मयोग का संदेश दिया, वह हम सबको आज भी प्रेरणा देता है, मार्गदर्शन देता है। भगवान श्री राम का जीवन हमें सिखाता है कि एक आदर्श जीवन कैसे जिया जा सकता है, एक आदर्श मनुष्य कैसे बना जा सकता है। भगवान श्री राम का दर्शन एक आदर्श मनुष्य बनने की हमें प्रेरणा देता है। भगवान श्रीकृष्ण का संदेश एक कर्मयोगी का संदेश है।

सत्य पर चल कर, कभी आवश्यकता पड़ने पर भी हमें सत्य और देश व समाज के हित में युद्ध की आवश्यकता पड़े तो लड़ना चाहिए। आज मैं देखता हूँ कि अहीर समाज का योगदान इस देश के लिए कितना बड़ा है। आजादी के पहले का इतिहास देखें तो आजादी की लड़ाई लड़ने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। उसके पहले राजाओं के राज में भी अहीर समाज का योगदान बहुत बड़ा रहा है। उसके बाद आजादी की लड़ाई में योगदान रहा। आजादी के बाद इस देश के नवनिर्माण में, इस देश की रक्षा करने में, इस देश को प्रगति और खुशहाली की ओर ले जाने में अहीर समाज का योगदान रहा है।

अहीर समाज एक ऐसा समाज है जो हमेशा कर्मयोगी समाज रहा है। आप अहीर समाज के जीवन दर्शन को देखिए। अलग-अलग राज्यों के अंदर, अलग-अलग प्रदेशों के अंदर, अलग-अलग जिलों के अंदर, अलग-अलग तहसील में आप यह पाएंगे कि एक तरफ अहीर समाज का व्यक्ति किसान है, जो मेहनत कर के अन्नदाता के रूप में देश सेवा का काम करता है।

दूसरी तरफ सीमा पर खड़ा नौजवान है, जो देश रक्षा का काम कर रहा है। एक तरफ समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन परिवर्तन करने के लिए, सामाजिक सेवा हो, राजनीतिक जीवन हो, उसमें अपना समर्पण देता है। जहां कहीं भी आवश्यकता होती है, वहां अलग-अलग क्षेत्रों के अंदर एक कर्मयोगी की तरह सर्वश्रेष्ठ काम

करते हुए, उस समाज की सेवा करने का काम करता है। उस समाज के संस्कार हमें मिले हैं जिन्होंने हमेशा कर्मयोगी की तरह काम किया है।

आज भी मैं इस पीढ़ी को देखता हूँ कि किसी भी क्षेत्र में काम कर रहे हों, श्रेष्ठता से काम करना, पूरे समर्पण के साथ करना और जहां भी रहें वहां नेतृत्व करना, यह इस समाज की विशेष पहचान है।

मेरा इस समाज से बड़ा नजदीक का संबंध है। इस नाते मैं देखता हूं कि एक स्वाभिमानी समाज, एक आत्मविश्वासी समाज, जो हमेशा सम्पूर्ण समाज की सेवा करने का काम करता है, उस समाज के नौजवान, अभी हमारी बेटी आई थी, किस तरीके से एक बेटी ने बारा जैसे जिले से अपनी शिक्षा शुरू की, दिल्ली में पढ़ी, हायर एजुकेशन प्राप्त किया, लेकिन उसके मन के भाव अभी भी देश और राष्ट्र की सेवा करने के हैं। उसके मन के भाव नौजवान, युवक-युवतियों की प्रेरणा के हैं। एक गांव के अंदर भी अगर ऐसा समाज का व्यक्ति रहता है तो वह सम्पूर्ण गांव को साथ लेकर चलता है। वहां के सुख-दु:ख, वहां की पीड़ा हो, वहां की भागीदारी हो और जब कभी अन्याय हो रहा हो, तो अन्याय के लिए स्वाभाविक रूप से लड़ने की आदत समाज में, हर अन्याय के खिलाफ यह समाज स्वाभाविक रूप से लड़ता है। अन्याय के खिलाफ स्वाभाविक रूप से लड़ना भगवान श्रीकृष्ण का ही संदेश है।

आज इस समाज का योग्य व्यक्ति परिचय सम्मेलन है। मैं सबको शुभकामनायें देता हूं, बधाई देता हूं।

समाज के सभी लोगों को शुभकामनायें, जो एक प्लेटफॉर्म पर सारे समाज के नौजवान, योग्य व्यक्तियों को परिचय सम्मेलन के माध्यम से लाये हैं, ताकि हमारी सामाजिक एकता बनी रहे।

समय परिवर्तन होते-होते समय इतना परिवर्तन हो गया है कि अब बेटे-बेटियों की शादी कंप्यूटर से होने लगी, मैरिज ब्यूरो से होने लगी, बड़े लोग ब्रोकर से करने लगे। यह समाज में सकारात्मक संदेश नहीं है।

अगर समाज को सामाजिक  समरसता से चलना है, समानता से चलना है, समतामूलक समाज बनाना है तो इस तरीके से एक छत के नीचे सब बैठें, चर्चा करें संवाद करें, आपस में एक-दूसरे परिवार को समझें और जो रिश्ते बनते हैं, वे मजबूत रिश्ते रहते हैं। वे रिश्ते टूटते नहीं है।

कंप्यूटर के रिश्ते या मैरिज ब्यूरो के रिश्ते या ब्रोकर के रिश्ते, उन रिश्तों में बंधन में कहीं न कहीं टूट आ जाती है, लेकिन एक छत के नीचे बैठकर लोकतांत्रिक प्रणाली से, चर्चा से, संवाद से, सहमति से, आपस में समझकर, जो रिश्ते बनते हैं, वे मजबूत रिश्ते बनते हैं।

इसीलिए कहा है कि दुनिया के अंदर भारत का लोकतंत्र इसलिए मजबूत है कि हमने हर समस्या का समाधान चर्चा और संवाद से निकाला है।

हमने कोशिश की है कि चर्चा, संवाद से, सहमति से सब काम चले। यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है, परम्परायें हैं, विचार है, कार्य शैली है, कार्य संस्कृति है। गांव में हो, समाज में हो, कोई विवाद हो, झगड़ा हो तो हम कोशिश करते हैं कि पहले घर पर बैठकर चर्चा कर लें आपस में विवाद का सिमटारा यहां कर दें। घर परिवार की बात बाजार में न जाए, घर में रहे, यह लोकतंत्र की कार्य संस्कृति है। मुझे खुशी है कि आप हर वर्ष इस तरीके के कार्यक्रम का आयोजन करते हैं, सामूहिक विवाह सम्मेलन करते हैं। यह सब सामाजिक परिवर्तन की दिशा है।

मैं पुन :समाज के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत शुभकामनायें देता हूं, बधाई देता हूं और सभी परिवारजनों को नववर्ष की शुभकामना के साथ, नये संकल्प के साथ, नये आत्मविश्वास के साथ, हम देश को भी आगे बढ़ायेंगे और समाज को इसी तरीके से सम्पूर्ण समाज की सेवा और समर्पण में हम हमेशा जो हमारे संस्कार हैं, जो हमारी संस्कृति है, जो विचार है, उसमें सम्पूर्ण समाज की सेवा ऐसे ही करते रहेंगे और जब कभी अन्याय और अत्याचार होगा, तो अग्रिम पंक्ति पर हम उनके साथ खड़े रहेंगे। आज भी हमारा नौजवान, सेना में हो, अर्धसैनिक बल में हो, देश व राष्ट्र की सेवा के लिए इसी तरीके से खड़ा रहता है। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद।

---